षष्ठम् अध्याय

उपसंहार

==

षष्ठम् अध्याय

उपसंहार

==

डा.जगदीश गुप्त नयी कविता के एक सशक्त प्रतिनिधि कवि होने के साथ-साथ हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य समीक्षक तथा एक अच्छे चित्रकार भी हैं। इसलिए काव्य की अभिव्यक्ति में भी उनकी दृष्टि सौन्दर्य के निखार में तन्मयता दिखाई देती है। उन्होंने एक चित्रकार की दृष्टि के माध्यम से प्रकृति को कई रूपों में चित्रित किया है। सफल चित्रकार होने के नाते उन्होंने "गोपा गौतम" इस संवाद-काव्य में प्रत्येक अंश के प्रारंभ में छोटासा लेकिन बहुत ही मार्मिक चित्र खींचा है। चित्र को देखते ही उस अंश का विवरण मिल जाता है।

डा.जगदीश गुप्त ने नारी के प्रति यथार्थ भाव भूमिपर स्थिर रहने का प्रयास किया है। इस संबंध में उनकी यथार्थ दृष्टि उन्हें संवेदना के धरातल पर मांसल बनकर नयी कविता के यथार्थ परक धरातल से जोड देती है। उन्होंने इस क्रम में प्रणय की दृष्टि से किसी विकार या वासना को हेय दृष्टि से न देखते हुए उसके महत्व को प्रेम के परिपेक्ष में प्रस्तुत करते हुए उसे मनुष्य की आदी प्रवृत्ति माना है। जगदीश गुप्तजी ने यशोधरा याने गोपा की नयी परिकल्पना की है। जिसमें उसके मातारूप की अपेक्षा नारी-रूप प्रधान है। गोपा का चित्रण सबला रूप में किया हैं। डा.जगदीश गुप्तजी ने "गोपा गौतम" इस संवाद-काव्य में गोपा और गौतम के संवादों से अनेक नारी विषयक समस्या समाज में फैले हुये रीति-रिवाजों के बंधन, कुल की मान-मर्यादा आदि का चित्रण बहुत ही मार्मिकता से किया है। जैसे कि - बिना संतान स्त्री को समाज बाँझ कहकर पुकारता है। मातृत्व के बिना स्त्री का जीवन व्यर्थ, निष्फल, अपमातिन है। पति बिना मातृत्व समाज को रास नहीं है। इसलिए यथार्थ होकर भी स्त्री को अपमान सहना पड़ता है, निरपराध होकर भी लांछन का बोझ ढ़ोना पड़ता है। नारी ही पुरूष को अपने कर्तव्य के प्रति सजग करती है इतना ही नहीं नारी के मोहपाश में जकडे हुए पुरूश को उस मोह से हटाकर अपने कार्य कर्तव्य के लिए जगाती है। पिता और गुरू से भी बढ़कर विश्व में माता का स्थान रहा है। युग युग से नारी पर बंधन तथा मर्यादा डाली जाती

है और नारी चुपचाप सहती आयी है। किसी भी नारी के मन में प्रतिवाद करने की हिम्मत नहीं जुटाई। आज नारी को पुरूष से बराबर हक्क मिल रहे है। अतः आज की नारी में अन्याय, अत्याचार का प्रतिकार करने की हिम्मत आ गयी है। पर आज भी अनेक स्त्रियाँ ऐसी है कि अन्याय, अपमान, मार–पीट चुपचाप सहन कर अपना जीवन बिल्ली की तरह काटती है। शासन की ओर से स्वायत्ता होनेपर भी वह अपना मुँह खोलने को तैयार नहीं है, प्रतिवाद करने की उनमें ताकद नहीं है। उन नारियों को गौतम बुध्द ने स्फुर्ती दिलाने का प्रयास किया है वह आज भी बड़ा उपयुक्त साबित होता है।

बालक के जन्म के लिए पिता तो निमित्त मात्र है। पर माता ही उसकी भाग्यविधाती होती है। पुरूष समाज को नारी का गैर पुरूषों के बीच रहना पसंद नहीं, अतः पुरूष पत्नी होकर भी, प्रिय होकर भी अपनी धर्मपत्नी से विरक्त होता है। सामान्य पुरूष से लेकर सात्विक पुरूष तक नारी के बारे में संदेह निर्माण होता है। यह नारी जाति का दुर्भाग्य है। यौवन कालीन भूल को मानव याने समाज नारी को ही एकमात्र दोषी ठहराता है। नारी की तरफ ही अँगुली दिखा दी जाती है और पुरूष को वह एक पुरूष है इसलिए उसे कोई कुछ नहीं कहता, क्योंकि वह एक पुरूष है इसलिए उसे सब माफ है। पति और पत्नी को जीवन की कोई भी बात एक दूसरे को बताकर तथा विश्वास के साथ नहीं की तो दोहों के बीच का ममत्व, अपनत्व, नष्ट होकर हमेशा के लिए दूरत्व की कड़ी निर्माण होती है। बाध्यता नारी अपनी नैतिकता खो बैठती है। नारी मन की उलझन कोई नहीं समझता। गृहस्थी में पति–पत्नी का एक विचार होना चाहिए। आदि विचारों का अंकन डा.जगदीश गुप्तजी ने यशोधरा याने गोपा और सिध्दार्थ (गौतम बुध्द) के चरित से बहुत ही सुंदर, सहज भावाभिव्यक्ति से किन्तु मार्मिक शैली में किया है।

डा.जगदीश गुप्तजी ने "बोधिवृक्ष" और "गोपा गौतम" इन दो खण्डकाव्य गौतम बुध्द के आचार–विचार, उनके उपदेश, संसार के प्रति देखने का दृष्टिकोण, समाज के प्रति करूणादृष्टि, शोषकों की दांभिक प्रवृत्ति पर रोष, शोषितों के प्रति आत्मीयता, दरिद्र लोगों के प्रति गौतम की सहानुभूति, जीवन की गहराई, आत्मा–परमात्मा संबंधित उनके विचार, संसार की क्षणभंगुरता, परिवर्तनशीलता गौतम के मानवतावादी विचार, मृत्यू संबंधी दृष्टिकोण आदि के द्वारा बौध्द धर्म का दर्शन किया है।

मनुष्य जीवन में घटनाचक्र घटकर ही रहता है। उसमें मनुष्य कोई परिवर्तन नहीं कर सकता और ना ही वह उसे रोक सकता है। जो बीज बोता है वहीं पेड़ का स्वामी होता है। बीते अनुभव ही मनुष्य के जीवन में भविष्य का पथदर्शन करते है। संकट के समय में मनुष्य का एक मात्र साथी उसका विवेक होता है। संसार की गतिशीलता में सुख-दुःख के उतार–चढ़ाव आते ही रहते हैं। लेकिन जो मनुष्य अविचल रहकर कुछ बाते भूलकर कुछ याद करते हुए आगे बढ़ता है वह सफल होता है।

मनुष्य को झुठे मोह–माया से सच्चा सुख तथा आत्मिक सुख नहीं मिलता। सृष्टि व्याप्त करूणा का मतलब है प्राणियों की आपस की ममता। घर तथा समाज की कल्याण कामना का भाव–बिंदू सामूहिक मन से उपजता है। भ्रमित मन को मन के दृढ़निश्चय से ही सच्चे पथ पर लाया जाता है। परिवर्तन ही क्षणभंगुर सृष्टी का सुस्थायी धर्म है। गति के साथ–साथ यति को भी जानना यही जीवन है। नारी और पुरूष मनुष्य सृष्टि के दो रूप है। एक के बगैर दूसरा अधूरा है। युगों युगों से इस समाज में परिवर्तन का बदलाव आया है। परिवर्तन केवल दुख ही नहीं बल्कि सुख भी देता है। लेकिन उस सुख के लिए इंतजार करना पड़ता है। तथा संयम रखना पड़ता है। छोटा बच्चा जब किसी पीडा से पीड़ीत होकर रोता है तब उसके सामने खिलौना रखने से वह पलभर में ही अपनी पीड़ा भूलकर हँसने, मुस्कुराने तथा बहुत ही रूचि लगाकर खेलने लगता है। अतः मनुष्य को भी आज के दुख से दुखी होकर जीवन से ही मुँह मोड़ना अच्छा नहीं बल्कि भविष्य के सुख के प्रति कामना रखकर और आगे बढना चाहिए। मनुष्य के हृदय कि गति में श्वासों में रक्त के प्रवाह में एक लयबध्दता समायी है वह हमे दुखपर विजय पाने के लिए सहायता करती है उसे हमे पहचानने की जरूरत है। यह सब मनुष्य अपने सद्सद्विवेक बुध्दि से कर सकता है।

परिवर्तन ही प्रकृति का अंतिम सत्य है मनुष्य ने गृह–केन्द्रित ममता, माया तोड़कर विश्वव्यापी बनाया तो पृथ्वीपर या संसार में फैला हुआ दुखदाह मिट जायेगा। मनुष्य ने अपने जीवन में स्थित दुख का बोझ स्वयं ही उठाना चाहिए। किसी दूसरे पर बोझ का भार सौंपना अच्छा नहीं है। जिंदगी अपनी है, सोच समझकर ही उसे बिताना अच्छा है। नहीं तो बुरे कर्मवाले दलदल में गिर जाने की संभावना अधिक है। जीवन का सार समझने के लिए अपने मन की दुर्बलता को जीतना चाहिए। मन की कायरता ही असत्य भाषाण की जननी है। अतः जीवन की गतिविधि में इसका

आश्रय लेना गलत है। जब आदमी गिरता है तो खुद ही उठने का प्रयत्न भी करता है। मनुष्य की प्राकृतिक वृत्ती – असफलता ही सफलता की राह दिखलाती है।

गौतम में नया प्रगतिवादी प्रयोगशील विचार भी मिलते हैं। किसी भी नये मार्ग की सफलता का निश्चित प्रमाण उसका प्रयोग और उससे मिला हुआ अनुभव होता है। राजतन्त्र में सेवा के नाम पर स्वयंसिध्द, आशा रखनेवाले अधिकार होते है लेकिन वह सब एक बुरखा हैं। सामान्य जतना अपनी भूख भी तृप्ति से नहीं मिटा सकते। बची–खुची जूठन पर जनता का अधिकार कहा जाता है। सामाजिक विषमता गौतम को पसंद नहीं है। राजपक्ष द्वारा शासन व्यवस्था से सुखी पीड़ित, गरिब, दीन लोगों की व्यथा, चिन्ता दूर करके उनका जीवन सुखमय बनाया जा सकता है। सत्ताधारियों को सबक सिखाना चाहिए इसलिए आम जनता में संघटन शक्ति, एकात्मता होनी चाहिए। देश की समुचित उपलब्ध धन–साधन से देशवासियों का दु:ख दर्द मिटाना चाहिए याने आवश्यक सुविधा की प्राप्ति आम जनता को मिलनी चाहिए। शासन की बागड़ोर प्रजाहित दक्ष आदमी पर सौंपकर सबके कल्याण की कामना करनी चाहिए। इसतरह गौतम बुध्द मनुष्य पुत्र होकर पैदा हुए थे और वे भी साधारण व्यक्ति थे। राजकुल में उन्होंने अवश्य जन्म लिया था लेकिन गौतम, राजवैभव सुख–संपत्ती, ऐषोआराम की जिंदगी, पिता, माता, परिजन, पत्नी, सुंदर सा बेटा आदि को त्याग दिया था और जगत् का दु:ख मिटाने के लिए विरक्ति का मार्ग अपना लिया था। इतना ही नहीं तो उन्होंने रेशमी वस्त्र उतार कर साधु जैसी गिरवी वस्त्र पहने थे। सुंदर बालों को भी उन्होंने काट डाला था। ऐसे पेहराव से हाथ में भिक्षापात्र लेकर भटकते रहते थे। उनमें किसी के भी प्रति आसक्ति नहीं थी। उन्होंने अपनों से लोभ, मोह, काम, मद, मत्सर से घुटकारा पा लिया था। उनके सामने स्वयं मार को हारना पड़ा था। इतने गौतम अपनी साधना में विलीन हो गये थे। उनको जगत का दुख टेरता रहता था। मानो लगत कल्याण का उन्होंने वीड़ा ही उठाया था। गौतम बुध्द ने अपनी वाणी से दांभिक प्रवृत्ती के लोगोंपर विजय प्राप्त किया है। किसा गौतमी को मृत्यू चिरंतन, अटल है इसपर प्रवचन देकर उनके मन में होनेवाली मृत्यू और बुध्द के प्रति श्रध्दा याने उसके पुत्र को चेतनता प्राप्त कर देनेवाली अंधश्रध्दा के कारणवश उसकी करूण विव्हलता को हटा दिया है उसके संदर्भ में राई के दाने का उदाहरण देकर किसा गौतमी का भ्रम निकल दिया है। ऐसे गौतम प्रकाण्ड पण्डित ही थे। किसा गौतमी का भ्रम निकालकर उसे भिक्षुणी बनाने में सफल हुए इस तरह वे अपने बौध्दसंघ को बढ़ा देते थे। देवदत्त जैसे कपटी भाईपर भी गौतम ने अपने कर्तव्य से चकित

किया था। गौतम समाज में फैले हुए विषरूपी मंथन का रूपांतर अमृतरूपी मंथन में करना चाहते थे। इसलिए वे कृष्ण की तरह समाजरूपी यमुना दाह में नाथने की इच्छा करते है।

बुध्द धर्म में कर्मकाण्ड के लिए स्थान नहीं है। वस्तुतः उन्हें याग और यज्ञ को धर्म के अर्थ में मानने से घृणा थी। कर्मबध्द शब्द बुध्द द्वारा ही प्रयुक्त हुआ है। यथार्थ में कहना ही पड़ेगा कि बुध्द संसार में वह प्रथम शिक्षक थे, जिन्होंने नैतिकता को धर्म की नींव और सार बतलाया। इसप्रकार गौतम चरित, बुध्द दर्शन का चित्रण डा.जगदीश गुप्तजी ने "बोधिवृक्ष" और "गोपा गौतम" खण्डकाव्यों में कराकर समाज प्रबोधन का काम अत्यंत ही सहज उद्‌बोधक रूप में किया है।

अन्त में डा.जगदीश गुप्तजी ने गौतम की विरक्ति का कारण जरा, रोग, मृत्यू दर्शन मानकर गोपा के सतीत्व के बारे में गौतम के मन में संदेह पैदा होने से वह विरक्त हो गये होंगे। यह भी सही हो सकता है क्योंकि सिर्फ तीन दृश्य देखकर इतना महान त्याग कर अपना जीवन संकट में नहीं डालता। गहरी चोट लगने के सिवा आदमी इतना बड़ा त्याग नहीं कर सकता। जगदीश गुप्त द्वारा "गोपा गौतम" इस संवाद काव्य में उद्‌धृत "बोझिला अन्तराल" और "राहुल जन्मोत्तर–यति" यह एक प्रकार का दर्शन ही है। "गोपा–गौतम" यह कृति आधुनिक युगबोध तक पहुँचनेवाली रचना है। "बोधिवृक्ष" और "गोपा गौतम" इन दोनों खण्डकाव्यों में गौतम बुध्दचरित, उनकी दृष्टि द्वारा समाज प्रबोधन करने की अभिनव प्रयोग ही है। गौतम चरित के वर्णन हमें नये तरीके से जीवन जीने की, समाज के प्रति सही दृष्टि की लैन्स लगाकर देखने की हमें सीख मिलती है। सचमुच जगदीश गुप्त द्वारा लिखित "गोपा गौतम", "बोधिवृक्ष" यह दो खण्डकाव्यों में वर्णित प्रत्येक समस्या हल करने के कारण उसपर बंड करने की पुकार को चेतावनी देनेवाली काव्यरचना है। वह दोनो खण्डकाव्य आज और कल के लिए भी बहुत ही प्रभावकारी सिध्द हो सकते है। हमें तो यह दोनो खण्डकाव्य में घटित या वर्णित समस्या आज भी समाज में दिखाई देती है मानो उसमें एक नया तरीका ही अपनाया है। इसतरह ये दोनो काव्य की रचना एक नया युगबोध है।